Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
January 2024
ISSN 2229-3388

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के परिप्रेक्ष्य में भारत की पूर्व नीति: सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (2010–2022)

चैताली सोमेश्वर धांडे
शोधकर्ता
राजनीति विज्ञान विभाग, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज
नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर

मार्गदर्शक
डॉ. प्रवीण श्रीराम भागडीकर
राजनीति विज्ञान विभाग प्रमुख,
अण्णासाहेब गुंडेवार महाविद्यालय, नागपूर

सारांश (Abstract)

यह शोध-पत्र 2010 से 2022 के कालखंड में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संदर्भ में भारत की पूर्व नीति के सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शीत युद्धोत्तर काल में वैश्विक शक्ति-संतुलन में आए परिवर्तनों, चीन के बढ़ते प्रभाव, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की रणनीतिक महत्ता तथा बहुपक्षीय सहयोग के नए स्वरूपों ने भारत की विदेश नीति को पुनर्परिभाषित करने के लिए प्रेरित किया। इस पृष्ठभूमि में भारत की 'लुक ईस्ट नीति' का रूपांतरण 'एक्ट ईस्ट नीति' के रूप में हुआ, जिसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधों को सुदृढ़ करना रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में ASEAN देशों के साथ भारत के रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी प्रयासों तथा आर्थिक साझेदारी, व्यापार, निवेश और क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि भारत की पूर्व नीति में सुरक्षा और आर्थिक आयाम परस्पर पूरक हैं और दोनों मिलकर क्षेत्रीय स्थिरता एवं भारत के रणनीतिक हितों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
January 2024
ISSN 2229-3388

प्रमुख शब्द (Keywords) :-
भारत की पूर्व नीति, एक्ट ईस्ट नीति, दक्षिण-पूर्व एशिया, ASEAN, सुरक्षा सहयोग, आर्थिक सहयोग, इंडो-पैसिफिक

परिचय :-

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के साथ ही वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा संरचना में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। एशिया-प्रशांत क्षेत्र, विशेषतः दक्षिण-पूर्व एशिया, अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। इस क्षेत्र में तीव्र आर्थिक विकास, समुद्री व्यापार मार्गों की रणनीतिक महत्ता, तथा प्रमुख शक्तियों की बढ़ती सक्रियता ने इसे वैश्विक शक्ति संतुलन का निर्णायक क्षेत्र बना दिया है। ऐसे परिवर्तित अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत की विदेश नीति में भी उल्लेखनीय बदलाव दृष्टिगत होता है।

शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत ने अपनी विदेश नीति को अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना प्रारंभ किया। इसी क्रम में 1990 के दशक में "लुक ईस्ट नीति" की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करना था। कालांतर में वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों में आए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप इस नीति को और अधिक सक्रिय एवं व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया, जिसे 2014 के बाद "एक्ट ईस्ट नीति" के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह नीति भारत की पूर्व नीति का उन्नत और क्रियाशील रूप मानी जाती है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देश, विशेष रूप से ASEAN के सदस्य राष्ट्र, भारत की पूर्व नीति के केंद्र में रहे हैं। यह क्षेत्र न केवल भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है, बल्कि सामरिक और सुरक्षा दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। दक्षिण चीन सागर, मलक्का जलडमरूमध्य और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की रणनीतिक स्थिति ने भारत की सुरक्षा चिंताओं और आर्थिक हितों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य उपस्थिति, गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ तथा समुद्री सुरक्षा से जुड़े मुद्दों ने भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ अपने संबंधों को पुनर्परिभाषित करने के लिए प्रेरित किया है।

2010 से 2022 का कालखंड भारत की पूर्व नीति के विकास की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। इस अवधि में भारत ने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ रक्षा सहयोग, समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी प्रयासों तथा आर्थिक साझेदारी को नई गति प्रदान की। भारत–ASEAN मुक्त व्यापार समझौता, इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण, क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाएँ और बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय सहभागिता इस नीति के प्रमुख आयाम रहे हैं। इस कालखंड में भारत ने स्वयं को न केवल एक उभरती हुई शक्ति के रूप में, बल्कि एक उत्तरदायी और विश्वसनीय क्षेत्रीय साझेदार के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य 2010 से 2022 के कालखंड में दक्षिण-पूर्व एशियाई

देशों के संदर्भ में भारत की पूर्व नीति के सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार भारत की पूर्व नीति ने क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक सहयोग और सामरिक संतुलन को प्रभावित किया है। साथ ही, यह शोध भारत की पूर्व नीति की उपलब्धियों, सीमाओं और भविष्य की संभावनाओं का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

अनुसंधान उद्देश्य (Research Objectives) :-

1. 2010 से 2022 के कालखंड में भारत की पूर्व नीति के विकास का विश्लेषण करना।
2. दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संदर्भ में भारत की सुरक्षा नीति के प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।
3. भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच आर्थिक सहयोग, व्यापार एवं निवेश की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
4. भारत की पूर्व नीति में सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना।
5. क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति-संतुलन में भारत की भूमिका के संदर्भ में पूर्व नीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) :-

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारत की पूर्व नीति के सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों के अध्ययन हेतु गुणात्मक अनुसंधान पद्धति (Qualitative Research Method) को अपनाया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसका उद्देश्य नीतिगत प्रवृत्तियों, रणनीतिक प्राथमिकताओं तथा आर्थिक सहयोग के स्वरूप को समझना है।

भारत की पूर्व नीति का सुरक्षा आयाम :-

2010 से 2022 के कालखंड में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संदर्भ में भारत की पूर्व नीति का सुरक्षा आयाम विशेष रूप से सशक्त होकर उभरा है। इस अवधि में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक परिवर्तनों, चीन की बढ़ती सैन्य और समुद्री उपस्थिति, तथा पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों ने भारत को अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया को केवल एक आर्थिक साझेदार के रूप में नहीं, बल्कि अपनी व्यापक क्षेत्रीय और समुद्री सुरक्षा संरचना के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया है।

शीत युद्ध के पश्चात उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की विदेश नीति का उद्देश्य एक जिम्मेदार क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ करना रहा है। इसी पृष्ठभूमि में भारत की 'लुक ईस्ट नीति' का रूपांतरण 'एक्ट ईस्ट नीति' में हुआ, जिसमें सुरक्षा सहयोग को एक केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया।

- **समुद्री सुरक्षा और इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण**

दक्षिण-पूर्व एशिया वैश्विक समुद्री व्यापार का एक प्रमुख केंद्र है। मलक्का जलडमरूमध्य, दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर से होकर विश्व व्यापार का एक बड़ा भाग संचालित होता है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा, व्यापारिक हित और समुद्री संपर्क इन समुद्री मार्गों पर निर्भर हैं। इस कारण भारत की पूर्व नीति में समुद्री सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

इंडो-पैसिफिक की अवधारणा के अंतर्गत भारत ने मुक्त, खुले और समावेशी इंडो-पैसिफिक (Free, Open and Inclusive Indo-Pacific – FOIP) का समर्थन किया है। भारत का दृष्टिकोण यह है कि समुद्री क्षेत्र किसी एक शक्ति के प्रभुत्व में न होकर अंतरराष्ट्रीय कानून, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (UNCLOS), के अनुसार संचालित होना चाहिए। इस संदर्भ में भारत ने इंडोनेशिया, सिंगापुर, वियतनाम और फिलीपींस जैसे देशों के साथ संयुक्त नौसैनिक अभ्यास, समुद्री डोमेन जागरूकता (Maritime Domain Awareness) और सूचना साझाकरण को बढ़ावा दिया है।

- **ASEAN के साथ रक्षा सहयोग**

भारत और ASEAN के बीच रक्षा सहयोग भारत की पूर्व नीति का एक प्रमुख स्तंभ बनकर उभरा है। ASEAN Defence Ministers' Meeting Plus (ADMM+) जैसे बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा संवाद को संस्थागत रूप प्रदान किया है। इन मंचों पर आतंकवाद-रोधी सहयोग, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR) तथा शांति अभियानों पर सहयोग को प्राथमिकता दी गई है। विशेष रूप से वियतनाम के साथ रक्षा प्रशिक्षण, रक्षा उपकरणों की आपूर्ति और रणनीतिक संवाद, सिंगापुर के साथ नौसैनिक सहयोग, तथा इंडोनेशिया के साथ समुद्री सुरक्षा साझेदारी भारत की बढ़ती क्षेत्रीय भूमिका को दर्शाती है। इन द्विपक्षीय और बहुपक्षीय प्रयासों के माध्यम से भारत ने स्वयं को एक विश्वसनीय सुरक्षा साझेदार के रूप में स्थापित किया है।

- **चीन कारक और सामरिक संतुलन**

दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति, कृत्रिम द्वीपों का निर्माण और क्षेत्रीय दावों ने दक्षिण-पूर्व एशिया की सुरक्षा संरचना को अधिक जटिल बना दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत की पूर्व नीति को संतुलनकारी शक्ति (Balancing Power) के रूप में देखा जा सकता है। भारत की रणनीति टकराव की बजाय संतुलन और सहयोग पर आधारित रही है। भारत ने लगातार यह स्पष्ट किया है कि वह अंतरराष्ट्रीय कानून, समुद्री स्वतंत्रता और संप्रभुता

के सम्मान के पक्ष में है। भारत की यह नीति न तो किसी एक शक्ति के प्रभुत्व को स्वीकार करती है और न ही सैन्य टकराव को बढ़ावा देती है। इसके बजाय, भारत विश्वास-निर्माण, संवाद और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने का प्रयास करता है।

- **गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ**

भारत की पूर्व नीति का सुरक्षा आयाम केवल पारंपरिक सैन्य खतरों तक सीमित नहीं है। आतंकवाद, समुद्री डकैती, साइबर अपराध, प्राकृतिक आपदाएँ और जलवायु परिवर्तन जैसी गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों ने क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को और अधिक बढ़ा दिया है। भारत ने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ आतंकवाद-रोधी प्रशिक्षण, खुफिया सूचना साझाकरण, आपदा प्रबंधन अभ्यास और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से इन चुनौतियों से निपटने का प्रयास किया है। विशेष रूप से मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) के क्षेत्र में भारत की भूमिका को क्षेत्रीय स्तर पर सकारात्मक रूप से देखा गया है।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि भारत की पूर्व नीति का सुरक्षा आयाम दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थिरता, सहयोग और सामरिक संतुलन को प्रोत्साहित करता है। यह नीति भारत को एक उत्तरदायी, संतुलनकारी और विश्वसनीय क्षेत्रीय सुरक्षा साझेदार के रूप में स्थापित करती है। 2010–2022 के कालखंड में भारत ने सुरक्षा सहयोग के माध्यम से न केवल अपने रणनीतिक हितों की रक्षा की है, बल्कि क्षेत्रीय शांति और सहयोग को भी सुदृढ़ किया है।

भारत की पूर्व नीति का आर्थिक आयाम :-

भारत की पूर्व नीति का आर्थिक आयाम 2010 से 2022 के कालखंड में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के संबंधों को नई दिशा देने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक रहा है। इस नीति के अंतर्गत भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया को केवल व्यापारिक साझेदार के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण, रणनीतिक स्थिरता और दीर्घकालिक विकास के सहयोगी के रूप में देखा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशिया की बढ़ती भूमिका, चीन-केंद्रित आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता, तथा क्षेत्रीय व्यापार समूहों के उभार ने भारत की आर्थिक कूटनीति को पुनः परिभाषित किया है।

शीत युद्ध के पश्चात भारत की आर्थिक उदारीकरण नीति (1991) के बाद यह स्पष्ट हो गया था कि आर्थिक विकास के लिए पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ जुड़ाव आवश्यक है। इसी पृष्ठभूमि में भारत की 'लुक ईस्ट नीति' का प्रारंभ हुआ, जिसका मूल उद्देश्य आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना था। किंतु 2010 के बाद इस नीति ने अधिक व्यापक और सक्रिय रूप ग्रहण किया, जिसमें आर्थिक सहयोग को रणनीतिक और सुरक्षा हितों से जोड़कर देखा गया।

- **भारत–ASEAN आर्थिक संबंधों का ऐतिहासिक और संस्थागत विकास**

ASEAN (Association of Southeast Asian Nations) भारत की पूर्व नीति का केंद्रीय आर्थिक स्तंभ रहा है। भारत और ASEAN के बीच संवाद साझेदारी की स्थापना 1992 में हुई थी, किंतु 2010 के बाद यह साझेदारी अधिक सुदृढ़ और व्यावहारिक बनी। भारत–ASEAN मुक्त व्यापार समझौता (ASEAN–India Free Trade Agreement – AIFTA) इस आर्थिक संबंध का सबसे महत्वपूर्ण संस्थागत आधार है। इस समझौते के अंतर्गत वस्तुओं (Goods), सेवाओं (Services) और निवेश (Investment) के क्षेत्रों में व्यापार को उदार बनाया गया। AIFTA ने टैरिफ में कटौती, बाजार तक पहुँच में सुधार और व्यापारिक बाधाओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके परिणामस्वरूप भारत और ASEAN देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई। ASEAN भारत के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में शामिल हो गया, जबकि भारत ASEAN के लिए एक उभरते हुए बड़े बाजार के रूप में स्थापित हुआ।

- **व्यापार संरचना और प्रमुख आर्थिक क्षेत्र**

भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच व्यापार की संरचना बहुआयामी रही है। भारत से ASEAN देशों को मुख्यतः पेट्रोलियम उत्पाद, फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल्स, मशीनरी, लौह एवं इस्पात, कृषि उत्पाद और वस्त्र निर्यात किए जाते हैं। वहीं ASEAN देशों से भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर्स, पाम ऑयल, रसायन और उपभोक्ता वस्तुओं का आयात किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेवाओं के क्षेत्र में भारत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। भारतीय IT कंपनियों ने सिंगापुर, मलेशिया और वियतनाम जैसे देशों में अपने संचालन का विस्तार किया है। इसके अतिरिक्त, फार्मास्यूटिकल और स्वास्थ्य क्षेत्र में भारत को 'फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड' के रूप में देखा जाता है, जिससे ASEAN देशों के साथ स्वास्थ्य-आधारित आर्थिक सहयोग भी बढ़ा है।

- **निवेश सहयोग और आर्थिक भागीदारी**

निवेश के क्षेत्र में भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच सहयोग आर्थिक आयाम का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। सिंगापुर भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का सबसे बड़ा स्रोत रहा है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों ने भारत के बुनियादी ढांचे, स्मार्ट सिटी परियोजनाओं, विनिर्माण, स्टार्ट-अप और सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय निवेश किया है। वहीं दूसरी ओर, भारतीय कंपनियों ने भी दक्षिण-पूर्व एशिया में ऊर्जा, दूरसंचार, बैंकिंग, निर्माण और IT क्षेत्रों में निवेश किया है। यह द्विपक्षीय निवेश न केवल आर्थिक संबंधों को गहराई प्रदान करता है, बल्कि दीर्घकालिक रणनीतिक विश्वास को भी मजबूत करता है।

- **क्षेत्रीय संपर्क (Connectivity) और आर्थिक एकीकरण**

भारत की पूर्व नीति में क्षेत्रीय संपर्क को आर्थिक विकास का आधार माना गया है। भौतिक, डिजिटल और जन-से-जन संपर्क को बढ़ावा देना इस नीति का प्रमुख उद्देश्य रहा है। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, कलादान

मल्टीमॉडल ट्रांजिट परियोजना और पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाली अन्य परियोजनाएँ इसी दृष्टिकोण का परिणाम हैं। इन संपर्क परियोजनाओं का उद्देश्य परिवहन लागत को कम करना, सीमा-पार व्यापार को सरल बनाना और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को क्षेत्रीय आर्थिक नेटवर्क से जोड़ना है। इस प्रकार, कनेक्टिविटी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और रणनीतिक महत्व भी रखती है।

- **बहुपक्षीय मंच, आपूर्ति श्रृंखला और नई आर्थिक चुनौतियाँ**

भारत ने ASEAN, BIMSTEC, ईस्ट एशिया समिट और अन्य बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ आर्थिक सहयोग को संस्थागत रूप दिया है। इन मंचों पर भारत ने सतत विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन (Supply Chain Resilience) जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है। कोविड-19 महामारी के बाद वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में आए व्यवधानों ने भारत के लिए नए अवसर उत्पन्न किए। चीन-केंद्रित आपूर्ति श्रृंखलाओं के विकल्प के रूप में भारत को एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में देखा जाने लगा। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ यह सहयोग भारत की आर्थिक कूटनीति को और सुदृढ़ करता है।

समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है कि भारत की पूर्व नीति का आर्थिक आयाम दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के संबंधों की रीढ़ है। आर्थिक सहयोग ने व्यापार, निवेश और संपर्क को बढ़ावा देने के साथ-साथ सुरक्षा सहयोग और राजनीतिक विश्वास के लिए भी अनुकूल वातावरण निर्मित किया है। 2010 से 2022 के कालखंड में भारत की आर्थिक कूटनीति ने उसे दक्षिण-पूर्व एशिया में एक उभरती हुई, संतुलित और विश्वसनीय आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया है। इस प्रकार, आर्थिक आयाम भारत की पूर्व नीति का एक अनिवार्य और पूरक घटक सिद्ध होता है, जो सुरक्षा और रणनीतिक आयामों के साथ मिलकर भारत की क्षेत्रीय भूमिका को मजबूत बनाता है।

निष्कर्ष (Conclusion) :-

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से 2010 से 2022 के कालखंड में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संदर्भ में भारत की पूर्व नीति के सुरक्षा एवं आर्थिक आयामों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत की पूर्व नीति केवल एक कूटनीतिक पहल न होकर एक व्यापक, बहुआयामी और दीर्घकालिक रणनीति के रूप में विकसित हुई है। इस नीति ने भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया में एक सक्रिय, उत्तरदायी और संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सुरक्षा आयाम के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया को अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना का अभिन्न अंग माना है। समुद्री सुरक्षा, इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण, ASEAN के साथ रक्षा सहयोग, तथा गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के प्रयास भारत की रणनीतिक परिपक्वता को दर्शाते हैं। विशेष रूप से चीन की बढ़ती सैन्य और समुद्री उपस्थिति के संदर्भ में भारत की

संतुलनकारी नीति ने क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने में योगदान दिया है। भारत की यह रणनीति टकराव की बजाय सहयोग, संवाद और अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान पर आधारित रही है।

आर्थिक आयाम के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत की पूर्व नीति की सफलता का एक प्रमुख आधार दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ बढ़ता हुआ आर्थिक सहयोग है। भारत–ASEAN मुक्त व्यापार समझौता, व्यापार और निवेश में वृद्धि, क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाएँ तथा बहुपक्षीय आर्थिक मंचों में सक्रिय भागीदारी ने भारत को इस क्षेत्र में एक विश्वसनीय आर्थिक साझेदार के रूप में स्थापित किया है। आर्थिक सहयोग ने न केवल भारत की विकास आवश्यकताओं को समर्थन प्रदान किया है, बल्कि सुरक्षा और राजनीतिक विश्वास को भी सुदृढ़ किया है।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारत की पूर्व नीति में सुरक्षा और आर्थिक आयाम परस्पर पूरक हैं, न कि परस्पर विरोधी। आर्थिक सहयोग ने सुरक्षा साझेदारी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया है, जबकि सुरक्षा सहयोग ने आर्थिक गतिविधियों को स्थिरता और विश्वास प्रदान किया है। इस प्रकार, भारत की पूर्व नीति एक समन्वित रणनीति के रूप में उभरती है, जिसमें कूटनीति, सुरक्षा और अर्थव्यवस्था एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

भविष्य की संभावनाएँ (Future Scope) :-

भविष्य में भारत की पूर्व नीति की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ अपने सहयोग को कितनी गहराई और निरंतरता प्रदान कर पाता है। क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं के शीघ्र क्रियान्वयन, डिजिटल अर्थव्यवस्था और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग, तथा समुद्री सुरक्षा में और अधिक समन्वय भारत की नीति को और सशक्त बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ASEAN के साथ संस्थागत संवाद को और मजबूत करना तथा बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाना भारत के दीर्घकालिक रणनीतिक हितों के लिए आवश्यक होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 2010–2022 के कालखंड में भारत की पूर्व नीति ने दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। यह नीति भारत को न केवल एक उभरती हुई शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, बल्कि उसे क्षेत्रीय शांति, स्थिरता और समावेशी विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ भी बनाती है।

संदर्भ (References)

1. Acharya, A. (2014). Constructing a security community in Southeast Asia: ASEAN and the problem of regional order (2nd ed.). Routledge.
2. ASEAN Secretariat. (2015). ASEAN Political-Security Community Blueprint 2025. Jakarta: ASEAN Secretariat.

3. Bajpai, K. P., & Pant, H. V. (2013). India's foreign policy: A reader. Oxford University Press.
4. Government of India, Ministry of External Affairs. (2014). Act East Policy. New Delhi: MEA.
5. Government of India, Ministry of Defence. (2016). Ensuring secure seas: India's maritime security strategy. New Delhi: MoD.
6. Jaishankar, S. (2020). The India way: Strategies for an uncertain world. HarperCollins.
7. Khurana, G. S. (2019). India's maritime strategy and the Indo-Pacific. Journal of the Indian Ocean Region, 15(2), 123–140.
8. Mohan, C. R. (2012). Samudra manthan: Sino-Indian rivalry in the Indo-Pacific. Oxford University Press.
9. Ministry of Commerce and Industry, Government of India. (2021). India–ASEAN trade statistics. New Delhi: Government of India.
10. Pant, H. V., & Rej, A. (2018). Is India ready for the Indo-Pacific? The Washington Quarterly, 41(2), 47–61.
11. Rajan, M. S. (2016). India and Southeast Asia: A political perspective. Konark Publishers.
12. Saran, S. (2019). India and the Indo-Pacific: The emerging strategic narrative. Observer Research Foundation Issue Brief, 308.
13. Singh, S. (2017). India–ASEAN economic relations: Emerging trends and challenges. Journal of Southeast Asian Studies, 48(3), 456–472.
14. World Bank. (2020). World development indicators. Washington, DC: World Bank.